

इति चतुर्थी चितिः पूर्णा ॥ ॥ इति श्रीमन्महीधरकृते वेददीपे मनोहरे । वेद-
चन्द्रमितोऽध्यायो वर्ण्यद्वित्रिचतुश्चितिः (39.) ॥

अथ काण्वशाखायां पाठविशेषः ॥

- I. ॥ १-४ ॥ १-४ ॥ ५. ६ [ग्रैष्माऽऋतू] ॥ ५ ॥ ५ ॥ ॥
II. ॥ ७ ॥ १ ॥ ८ a-e ॥ २ ॥ ८ f-k ॥ ३ ॥ ८ ॥ ॥
III. ॥ १ a-d ॥ १ ॥ e-h ॥ २ ॥ i-m ॥ ३ ॥ १० a-d ॥ ४ ॥ e-k ॥ ५ ॥
१३ ॥ ॥
IV. ॥ ११ ॥ १ ॥ १२ ॥ २ ॥ १३ [°रालसि - °रालसि - °रालस्यु°]. १४. १५
[वार्षिकाऽऋतू]. १६ [शारदाऽऋतू] ॥ ३ ॥ १६ ॥ ॥
V. ॥ १७ ॥ १ ॥ १८ a-f ॥ २ ॥ g-m ॥ ३ ॥ १९ a-f ॥ ४ ॥ g-m ॥ ५ ॥
२० ॥ ६ ॥ २३ ॥ ॥
VI. ॥ २१ ॥ १ ॥ २२ ॥ २ ॥ २४ ॥ ॥
VII. ॥ २३ a-k ॥ १ ॥ l-s ॥ २ ॥ २६ ॥ ॥
VIII. ॥ २४ a. b ॥ १ ॥ c. d ॥ २ ॥ २५ a. b ॥ ३ ॥ c [अदितेर्भा°] d ॥ ४ ॥
२६. २७ [°निकाऽऋतू] ॥ ५ ॥ ३१ ॥ ॥
IX. ॥ २८ ॥ १ ॥ २९ a-d ॥ २ ॥ २९ e. ३० a [श्रूद्रार्याऽऋतू. b. c ॥ ३ ॥
३० d. e. ३१ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ॥ नवानुवाकेषु पञ्चत्रिंशत् ॥ ॥

इति काण्वशाखायां संहितापाठे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ ॥

I. अग्नें ज्ञातान्प्रणुद नः सपत्नान्प्रत्यज्ञातान्नुद ज्ञातवेदः ।

अधि नो ब्रूहि सुमना अहेऽस्तव स्याम शर्मस्त्रिवद्वयऽउद्वौ ॥ १ ॥

चतुर्दशेऽध्याये (1.) द्वितीयतृतीयचतुर्थचितिमन्त्रानुक्ता पञ्चदशे पञ्चमचितिम-
न्त्रा वाच्याः ॥ का° [१७. ११. १. ३.] पञ्चम्यामन्त्रेष्वाग्निनीवदसपत्ना अग्ने ज्ञातानिति